

स्थापना : 2019 • कोई सदस्यता शुल्क नहीं



पब्लिक राइट्स एसोसिएशन

PUBLIC RIGHTS ASSOCIATION

जनता के अधिकारों की आवाज़

क्यों जुड़ें, क्यों न जुड़ें — जुड़कर क्या करें, क्या न करें
“हमको क्या मिलेगा?” का सीधा जवाब

कामरान असद

अध्यक्ष, पब्लिक राइट्स एसोसिएशन

publicrights.in

पब्लिक राइट्स एसोसिएशन

जनता के अधिकारों की आवाज़

क्यों जुड़ें, कैसे जुड़ें, जुड़कर क्या करें — और क्या बिल्कुल न करें

लेखक : कामरान असद

अध्यक्ष, पब्लिक राइट्स एसोसिएशन

संगठन स्थापना : 2019

प्रथम संस्करण : 2026

© 2026 कामरान असद — सर्वाधिकार सुरक्षित

टिप्पणी : यह पुस्तक पब्लिक राइट्स एसोसिएशन का परिचय, उसका विज़न-मिशन और सदस्यों के लिए मार्गदर्शिका है। इसमें अधिकारों के बारे में दी गई जानकारी सामान्य जागरूकता के लिए है। किसी विशेष मामले में अंतिम निर्णय से पहले संबंधित विभाग, दस्तावेज़ और योग्य सलाह को अवश्य देखें। संगठन किसी से कोई सदस्यता शुल्क नहीं लेता — इस नाम पर यदि कोई धन माँगे, तो उसे संगठन की ओर से अधिकृत न समझें।

वेबसाइट : publicrights.in

ईमेल : kamranasadjournalist@gmail.com

समर्पण

उन तमाम आम लोगों के नाम,
जिनकी सुनवाई कहीं नहीं हुई,
जिनका हक़ उन्हें नहीं मिला,
और जो अकेले खड़े होकर भी
सच और इंसान से पीछे नहीं हटे।
— यह संगठन उन्हीं की आवाज़ है

अनुक्रम

1. अध्यक्ष की कलम से — अकेले की आवाज़, संगठित होकर ताक़त बनती है
2. अध्याय 1 : 2019 की शुरुआत — एक सोच, एक संकल्प
3. अध्याय 2 : हमारा विज़न — समाज, जहाँ कोई बेसहारा न रहे
4. अध्याय 3 : हमारा मिशन — जानकारी, मार्गदर्शन और साथ
5. अध्याय 4 : यह संगठन सबसे अलग क्यों है?
6. अध्याय 5 : “हमको क्या मिलेगा?” — सबसे बड़े सवाल का सीधा जवाब
7. अध्याय 6 : जुड़ें तो क्यों जुड़ें?
8. अध्याय 7 : न जुड़ें तो क्यों न जुड़ें?
9. अध्याय 8 : आज साथ दीजिए, कल साथ मिलेगा
10. अध्याय 9 : जुड़ने के बाद क्या करना है?
11. अध्याय 10 : जुड़कर क्या बिल्कुल नहीं करना है?
12. अध्याय 11 : लोगों को जोड़ने का काम — हर सदस्य, एक कड़ी
13. अध्याय 12 : सोशल मीडिया पर प्रचार-प्रसार — सही तरीका
14. अध्याय 13 : लोकप्रियता और मिलते-जुलते नाम वाले संगठन
15. अध्याय 14 : किसके साथ खड़ा है यह संगठन?
16. अध्याय 15 : अधिकार जानना ही पहली ताक़त है
17. अध्याय 16 : एकता ही शक्ति है — भविष्य और संकल्प
18. परिशिष्ट : सदस्य संकल्प और एक दृष्टि में संगठन
19. अध्यक्ष परिचय

संगठन स्थापना : 2019 • सदस्यता : पूर्णतः निःशुल्क • publicrights.in

अकेले की आवाज़, संगठित होकर ताक़त बनती है

एक अकेला आदमी जब अपनी बात लेकर किसी दफ़्तर, किसी थाने, किसी कार्यालय के दरवाज़े पर खड़ा होता है, तो अक्सर उसकी आवाज़ भीड़ में दब जाती है। उसकी फ़ाइल आगे नहीं बढ़ती, उसकी बात पूरी सुनी नहीं जाती, और वह थक-हारकर यह सोचने लगता है कि शायद उसका कोई हक़ ही नहीं है। मैंने अपनी पत्रकारिता की ज़िंदगी में ऐसे हज़ारों चेहरे देखे हैं — सही होते हुए भी अकेले, और अकेले होने की वजह से मजबूर।

पब्लिक राइट्स एसोसिएशन की शुरुआत सन् 2019 में इसी एक सोच से हुई — अगर ये अकेले लोग एक साथ जुड़ जाएँ तो? अगर एक की आवाज़ की जगह सौ लोगों की संगठित आवाज़ बोले तो? अगर जानकारी, मार्गदर्शन और साथ — ये तीन चीज़ें हर उस इंसान तक पहुँच जाएँ, जिसकी सुनवाई नहीं हो रही? संगठन कोई इमारत नहीं होता, संगठन लोगों का एक-दूसरे के साथ खड़े होने का वादा होता है। यह पुस्तक उसी वादे को शब्द देती है।

अक्सर लोग मुझसे पूछते हैं — संगठन से जुड़कर हमको क्या मिलेगा? कुछ लोग पूछते हैं — जुड़ने के बाद करना क्या होगा? और कुछ सीधे यह भी कह देते हैं — हम तो बस नाम के लिए जुड़ना चाहते हैं। यह पुस्तक इन तीनों तरह के लोगों के लिए है। इसमें कोई गोल-मोल बात नहीं है। इसमें सीधा लिखा है — क्यों जुड़ें, क्यों न जुड़ें, जुड़कर क्या करना है, और क्या बिल्कुल नहीं करना है। जो व्यक्ति स्वार्थ के लिए आना चाहता है, उसके लिए भी इसमें स्पष्ट जवाब है, और जो सच में सेवा करना चाहता है, उसके लिए पूरा रास्ता है।

एक बात सबसे पहले और सबसे साफ़ — हम कोई सदस्यता शुल्क नहीं लेते। न जुड़ने का कोई पैसा है, न पद का, न पहचान-पत्र के नाम पर कोई वसूली। यह संगठन जनता का है, जनता के लिए है, और जनता के सहयोग से चलता है — सहयोग का अर्थ पैसा नहीं, समय, साथ और सच्चाई है।

मुझे यह कहते हुए गर्व भी है और चिंता भी कि हमारी लोकप्रियता इतनी बढ़ी कि अब हमारे नाम से मिलते-जुलते नाम रखकर लोग अपने संगठन बनाने लगे हैं। गर्व इसलिए कि यह जनता के भरोसे का सबूत है, चिंता इसलिए कि कहीं कोई भोला-भाला व्यक्ति नाम की समानता में भटक न जाए। इसीलिए इस पुस्तक में असली पहचान को परखने का तरीका भी दिया गया है।

यह पुस्तक मेरा आप सबसे एक निवेदन भी है — पढ़ें, समझें, और अगर दिल कहे कि यह रास्ता आपका है, तो जुड़िए। और जुड़कर सिर्फ सदस्य मत बनिए, जोड़ने वाले बनिए। आज आप किसी के साथ खड़े होंगे, तो कल जब आपको ज़रूरत होगी, यही समाज आपके साथ खड़ा मिलेगा। यही इस संगठन की आत्मा है।

— कामरान असद

अध्यक्ष, पब्लिक राइट्स एसोसिएशन

संपादक, मानवाधिकार मीडिया

2019 की शुरुआत — एक सोच, एक संकल्प

हर बड़े काम की शुरुआत किसी बड़े मंच से नहीं होती। उसकी शुरुआत एक बेचैनी से होती है — एक ऐसे सवाल से, जो रात को सोने नहीं देता। पब्लिक राइट्स एसोसिएशन की शुरुआत भी सन् 2019 में ऐसी ही बेचैनी से हुई थी — क्यों हर जगह आम आदमी ही पिसता है? क्यों उसकी सही बात भी सुनने वाला कोई नहीं मिलता? क्यों हक़ माँगना, भीख माँगने जैसा लगने लगा है?

पत्रकारिता के काम में रोज़ ऐसे लोग सामने आते थे, जिनकी कहानी एक जैसी होती थी। किसी का राशन कार्ड महीनों से अटका था, किसी की पेंशन बेवजह रुक गई थी, किसी किसान की फ़सल का मुआवज़ा कागज़ों में खो गया था, किसी मज़दूर की मज़दूरी दबा ली गई थी, किसी महिला की शिकायत दर्ज ही नहीं हो रही थी। समस्या अलग-अलग थी, लेकिन दर्द एक था — सुनवाई नहीं हो रही।

तब यह बात समझ में आई कि समस्या सिर्फ़ व्यवस्था की नहीं है, अकेलेपन की भी है। आम आदमी को अपने अधिकारों की जानकारी नहीं होती, सही जगह जाने का रास्ता नहीं मालूम होता, और सबसे बड़ी बात — उसके साथ खड़ा होने वाला कोई नहीं होता। जानकारी, रास्ता और साथ — इन तीन की कमी ही उसे कमज़ोर बनाती है। संगठन बनाने का संकल्प इन्हीं तीन कमियों को दूर करने का संकल्प था।

2019 में जब यह संगठन बना, तो इसके पास न बड़ा कार्यालय था, न बड़ी पूँजी, न बड़े-बड़ेवादों की सूची। इसके पास सिर्फ़ एक स्पष्ट सोच थी — जनता के अधिकारों के लिए, जनता के साथ, जनता की आवाज़ बनकर खड़े होना। नाम भी इसीलिए रखा गया — पब्लिक राइट्स एसोसिएशन। पब्लिक यानी जनता, राइट्स यानी अधिकार — जनता के अधिकारों का संगठन। नाम में ही काम छिपा है।

शुरुआत छोटे-छोटे कामों से हुई। किसी की बात संबंधित जगह तक पहुँचाना, किसी को सही आवेदन लिखने का तरीक़ा बताना, किसी पीड़ित के साथ कार्यालय तक साथ जाना, किसी को यह हिम्मत देना कि वह डरे नहीं — उसका हक़ उसका है, किसी की कृपा नहीं। धीरे-धीरे लोग जुड़ते गए, और जुड़ने वालों ने औरों को जोड़ा। कारवाँ ऐसे ही बनता है।

आज जब पीछे मुड़कर देखता हूँ, तो लगता है कि 2019 का वह संकल्प सिर्फ़ एक संगठन की शुरुआत नहीं था — वह एक भरोसे की शुरुआत थी। वह भरोसा, जो आज हज़ारों लोगों के दिल में है कि मुश्किल घड़ी में वे अकेले नहीं हैं। इस भरोसे को बनाए रखना ही इस संगठन की सबसे बड़ी ज़िम्मेदारी है, और यही ज़िम्मेदारी हर उस व्यक्ति की है, जो इससे जुड़ता है।

इस अध्याय से

संगठन इमारतों से नहीं, संकल्प से बनता है। पब्लिक राइट्स एसोसिएशन का संकल्प 2019 से एक ही है — जिसकी सुनवाई नहीं, उसके साथ खड़े होना; जिसको हक़ नहीं मिला, उसे रास्ता दिखाना।

अध्याय 2

हमारा विज़न — समाज, जहाँ कोई बेसहारा न रहे

विज़न का अर्थ है — वह तस्वीर, जो हम अपने समाज की देखना चाहते हैं। पब्लिक राइट्स एसोसिएशन का विज़न बहुत ऊँचे शब्दों में नहीं, बहुत साफ़ शब्दों में है — एक ऐसा समाज, जहाँ कोई भी व्यक्ति अपने अधिकार के लिए बेसहारा और अकेला न रहे।

हम ऐसा समाज देखते हैं, जहाँ ग़रीब और अमीर, मज़दूर और अधिकारी, किसान और व्यापारी — सबके लिए न्याय का दरवाज़ा बराबर खुले। जहाँ किसी की बात इसलिए न दबे कि वह कमज़ोर है, और किसी की बात इसलिए न सुनी जाए कि वह ताक़तवर है। जहाँ तराजू सच में बराबर हो — ठीक वैसा, जैसा हमारे संगठन के प्रतीक में न्याय की तराजू है।

हम ऐसा समाज देखते हैं, जहाँ नागरिक अपने अधिकारों को जानता हो। जानकारी ही वह पहली सीढ़ी है, जिसके बिना कोई लड़ाई शुरू ही नहीं होती। जिस दिन आम आदमी यह जान जाएगा कि उसका हक़ क्या है, कहाँ माँगना है और कैसे माँगना है — उसी दिन शोषण की आधी व्यवस्था अपने आप ढह जाएगी।

हम ऐसा समाज भी देखते हैं, जहाँ लोग एक-दूसरे के दुख में शामिल हों। आज का दौर धीरे-धीरे “मुझे क्या मतलब” की ओर बढ़ रहा है। हमारा विज़न इसके उलट है — “उसकी तकलीफ़, मेरी भी ज़िम्मेदारी”। जब पड़ोसी पड़ोसी के साथ, मोहल्ला मोहल्ले के साथ और शहर शहर के साथ खड़ा होगा, तो कोई ताक़त जनता को बाँट नहीं पाएगी।

और हम ऐसा समाज देखते हैं, जहाँ युवा सिर्फ़ नौकरी की तलाश में न भटके, बल्कि समाज की ताक़त बने; जहाँ महिलाओं को अपने अधिकारों के लिए किसी की इजाज़त की ज़रूरत न पड़े; जहाँ बुजुर्ग सम्मान के साथ जिएँ और किसान-मज़दूर की मेहनत को उसका पूरा हक़ मिले।

यह विज़न कोई सपना नहीं है, जिसे देखकर सो जाया जाए। यह दिशा है, जिस ओर हमें रोज़ एक क़दम बढ़ाना है। हर सदस्य, हर कार्यक्रम, हर मदद — इसी तस्वीर को सच करने की ओर बढ़ा हुआ एक छोटा, मगर सच्चा क़दम है।

हमारा विज़न — एक पंक्ति में

ऐसा भारत, जहाँ हर नागरिक अपने अधिकार जाने, किसी की सुनवाई रुके नहीं, और मुसीबत में कोई भी व्यक्ति अकेला न रहे।

हमारा मिशन — जानकारी, मार्गदर्शन और साथ

विज्ञान दिशा दिखाता है, मिशन रास्ता बताता है। हमारा मिशन तीन शब्दों में समाया है — जानकारी, मार्गदर्शन और साथ। ये तीनों मिलकर ही किसी पीड़ित को न्याय के दरवाज़े तक पहुँचाते हैं।

पहला मिशन — अधिकारों की जानकारी। हम लोगों तक उनके अधिकारों की सही जानकारी पहुँचाते हैं। कौन-सी योजना किसके लिए है, कौन-सा दस्तावेज़ कहाँ बनता है, शिकायत कहाँ और कैसे की जाती है, सुनवाई न हो तो अगला क़दम क्या है — यह सब आम भाषा में, आम आदमी की समझ में आकर बताना हमारा रोज़ का काम है।

दूसरा मिशन — सही मार्गदर्शन। अक्सर आदमी सही होते हुए भी ग़लत जगह भटकता रहता है। कभी वह ग़लत कार्यालय पहुँच जाता है, कभी ग़लत आवेदन, कभी बिचौलियों के चक्कर में पड़कर पैसा और समय दोनों गँवाता है। हमारा काम उसे सही रास्ता दिखाना है — ताकि उसकी मेहनत सही दिशा में लगे और वह ठगी से बचे।

तीसरा मिशन — साथ खड़े होना। जानकारी और रास्ता काफ़ी नहीं होता, कई बार आदमी को एक ऐसे इंसान की ज़रूरत होती है, जो उसके बगल में खड़ा होकर कहे — घबराओ नहीं, तुम अकेले नहीं हो। यह साथ ही वह ताक़त है, जो टूटते हुए इंसान को फिर से खड़ा करती है। संगठन का हर सदस्य यही साथ देने के लिए है।

इन तीनों के साथ हमारा एक और मिशन है — लोगों को जोड़ना। धर्म, जाति, अमीरी-ग़रीबी और क्षेत्र की दीवारों से ऊपर उठकर इंसान को इंसान से जोड़ना। और साथ ही, अन्याय के खिलाफ़ शांतिपूर्ण, क़ानूनी और संगठित आवाज़ उठाने की हिम्मत लोगों में पैदा करना।

ध्यान रहे — हम न्यायालय नहीं हैं, हम सरकार नहीं हैं, और हम किसी को झूठा दिलासा नहीं देते। हम वह कड़ी हैं, जो पीड़ित को उसके हक़ के रास्ते से जोड़ती है — ईमानदारी से, धैर्य से और पूरे साथ के साथ। यही हमारा मिशन है, कल भी यही था, आज भी यही है।

हमारा मिशन — तीन शब्दों में

जानकारी दो, सही मार्गदर्शन दो, और मुश्किल घड़ी में साथ खड़े हो — बिना शुल्क, बिना भेदभाव, बिना स्वार्थ।

यह संगठन सबसे अलग क्यों है?

आज संगठनों की कमी नहीं है। हर गली-मोहल्ले में बोर्ड लगे हैं, हर सीज़न में नए नाम उभरते हैं। ऐसे में यह सवाल बिल्कुल सही है — पब्लिक राइट्स एसोसिएशन सबसे अलग क्यों है? इसका जवाब बड़े दावों में नहीं, हमारी कार्य-शैली में है।

कोई सदस्यता शुल्क नहीं। यह हमारी सबसे बड़ी पहचान है। हम किसी से जुड़ने के नाम पर एक रुपया नहीं लेते। जहाँ सदस्यता बेची जाती है, वहाँ सदस्य ग्राहक बन जाता है। हमारे यहाँ सदस्य ग्राहक नहीं, साथी है। शुल्क न लेने की वजह से हमारे दरवाज़े सबसे गरीब व्यक्ति के लिए भी उतने ही खुले हैं, जितने किसी साधन-संपन्न के लिए।

पद नहीं, ज़िम्मेदारी। हमारे यहाँ जुड़ने का अर्थ फोटो और माला नहीं है। अर्थ है — काम। जो जुड़ता है, वह किसी न किसी की मदद की ज़िम्मेदारी उठाता है। संगठन अपने सदस्यों को शोभा की वस्तु नहीं, सेवा का सिपाही मानता है।

हर वर्ग, हर धर्म, हर उम्र के लिए खुले दरवाज़े। किसान हो या मज़दूर, महिला हो या बुजुर्ग, छात्र हो या युवा, व्यापारी हो या बेरोज़गार — जिसकी समस्या सच्ची है, हमारा साथ उसके लिए है। हम पहले इंसान देखते हैं, उसकी पहचान बाद में।

झूठे वादे नहीं, सच्ची बात। हम किसी को यह नहीं कहते कि कल ही तुम्हारा काम हो जाएगा। हम कहते हैं — रास्ता यह है, क़दम यह उठाना है, समय इतना लग सकता है, और इस पूरे सफ़र में हम साथ हैं। सच कड़वा हो सकता है, मगर वही भरोसा बनाता है।

लोकप्रियता, जो जनता ने दी। हमारी पहचान विज्ञापन से नहीं, लोगों के अनुभव से बनी है। जिसका काम हुआ, जिसको साथ मिला — वही हमारा प्रचारक बना। इसीलिए हमारी लोकप्रियता इतनी फैली कि आज मिलते-जुलते नामों वाले संगठन भी बनने लगे हैं — जिसका पूरा अध्याय आगे है। असली की पहचान हमेशा नक़ली की भीड़ से होती है।

याद रखिए

बिना शुल्क, बिना भेद, बिना झूठे वादे — यही तीन बातें इस संगठन को अलग बनाती हैं। जो संगठन ख़रीदा नहीं जाता, वही बिकता भी नहीं।

“हमको क्या मिलेगा?” — सबसे बड़े सवाल का सीधा जवाब

यह सवाल मैं सबसे ज़्यादा सुनता हूँ। जब भी किसी से संगठन से जुड़ने की बात होती है, थोड़ी देर बाद वही प्रश्न सामने आता है — “अच्छा, यह बताइए, हमको क्या मिलेगा?” मैं इस सवाल से नाराज़ नहीं होता। यह आज के दौर का स्वाभाविक सवाल है। लेकिन इसका जवाब भी उतना ही सीधा है, जितना सवाल।

सबसे पहले यह सुनिए कि क्या **नहीं** मिलेगा। यहाँ नौकरी नहीं मिलेगी, ठेका नहीं मिलेगा, पैसा नहीं मिलेगा, ऐसा पद नहीं मिलेगा जिससे आप दूसरों पर रौब झाड़ सकें, और कोई ऐसा परिचय-पत्र नहीं मिलेगा जिसका ग़लत फ़ायदा उठाया जा सके। अगर आप इनमें से किसी चीज़ की तलाश में हैं, तो यह पुस्तक आपसे साफ़ कहती है — यह संगठन आपके लिए नहीं है, आपका समय बर्बाद होगा।

अब सुनिए कि क्या मिलेगा। **सबसे पहले — साथ मिलेगा।** वह साथ, जिसकी कीमत वही जानता है जो किसी मुश्किल में अकेला पड़ चुका हो। जब आपकी सुनवाई नहीं होगी, जब आप थक जाएँगे, तब आपके साथ खड़े लोग मिलेंगे — यही इस संगठन की सबसे बड़ी “दौलत” है।

जानकारी और मार्गदर्शन मिलेगा। अपने अधिकारों को जानने की वह समझ मिलेगी, जो पूरी ज़िंदगी काम आती है — सिर्फ़ आपके नहीं, आपके परिवार, आपके मोहल्ले के काम की। ज्ञान वह चीज़ है, जो बाँटने से बढ़ती है और छीनने से भी नहीं छिनती।

सम्मान और पहचान मिलेगी — मगर सेवा वाली। लोग आपको पद से नहीं, काम से पहचानेंगे — और काम से बनी पहचान सबसे टिकाऊ होती है।

और सबसे बड़ी बात — कल के लिए भरोसा मिलेगा। आज आप किसी के लिए खड़े होंगे, तो यह अपने कल की सुरक्षा भी है। संगठन एक बीज है — उसकी छाँव ज़रूरत के दिन मिलती है।

तो जवाब यह है — यहाँ देने वालों को मिलता है। जो देने आता है, वही पाता है — साथ, सम्मान, जानकारी और हज़ारों लोगों की दुआएँ। दुआओं से बड़ी कमाई कोई दूसरी नहीं होती।

सीधा जवाब

पैसा, नौकरी, ठेका और रौब — नहीं मिलेगा। साथ, जानकारी, मार्गदर्शन, सम्मान और दुआएँ — मिलेगा। फ़ैसला आप करें कि आपको चाहिए क्या।

जुड़ें तो क्यों जुड़ें?

अब आते हैं उस सवाल पर, जो इस पुस्तक के दिल में है — संगठन से जुड़ें, तो क्यों जुड़ें? इसके कारण बहुत हैं, मगर मैं वे कारण गिना रहा हूँ, जो सच्चे हैं और ज़मीन पर खरे उतरते हैं।

क्योंकि अकेले आवाज़ दबती है, संगठित आवाज़ सुनी जाती है। यह ज़िंदगी का आजमाया हुआ सच है। एक व्यक्ति की सही बात भी अक्सर अनसुनी हो जाती है, मगर जब उसी बात को एक संगठित समूह शांतिपूर्ण तरीके से रखता है, तो सुनना पड़ता है। जुड़ना यानी अपनी आवाज़ को ताक़त देना।

क्योंकि कल आपको भी ज़रूरत पड़ सकती है। मुसीबत बता कर नहीं आती। आज सब ठीक है, मगर कल किसी अस्पताल, किसी दफ़्तर, किसी विवाद में आप भी अकेले पड़ सकते हैं। उस दिन संगठन के साथ की क़ीमत समझ आएगी। समझदारी यह है कि उस दिन से पहले ही परिवार का हिस्सा बन जाया जाए।

क्योंकि किसी का भला करना सबसे बड़ा धर्म है। अगर आपके जुड़ने से एक बुजुर्ग की पेंशन शुरू हो जाए, एक विधवा को उसका हक़ मिल जाए, एक छात्र की छात्रवृत्ति का रास्ता खुल जाए — तो यह वह पुण्य है, जो किसी दान-पेटी में नहीं मिलता।

क्योंकि जुड़ने का कोई शुल्क नहीं है। आपके पास खोने को कुछ नहीं है — न पैसा, न कोई बंधन। आपके पास देने को सिर्फ़ समय और साथ है, और पाने को एक पूरा परिवार।

क्योंकि यही वह मंच है, जहाँ आपकी पहचान आपके काम से बनेगी। अगर आप समाज में कुछ करना चाहते हैं, मगर समझ नहीं आता कि शुरुआत कहाँ से करें — तो यहीं से करें। यहाँ आपको काम मिलेगा, दिशा मिलेगी और साथ चलने वाले मिलेंगे।

क्योंकि देश और समाज, शिकायतों से नहीं, भागीदारी से बनता है। व्यवस्था को कोसना सबसे आसान काम है। मुश्किल काम है — आगे आकर, ज़िम्मेदारी लेकर, सिस्टम के भीतर जाकर सही के साथ खड़े होना। जुड़ना उसी मुश्किल, मगर सच्चे रास्ते का नाम है।

एक पंक्ति में

अपनी आवाज़ की ताक़त के लिए, अपने कल की सुरक्षा के लिए, और किसी के आज को बेहतर बनाने के लिए — जुड़िए।

न जुड़ें तो क्यों न जुड़ें?

यह अध्याय शायद किसी संगठन की पुस्तक में पहली बार लिखा जा रहा होगा — क्यों न जुड़ें। मगर मैं मानता हूँ कि ईमानदारी की शुरुआत यहीं से होती है। हर दरवाज़ा हर किसी के लिए नहीं होता, और यह कहना भी सेवा है कि आप ग़लत उम्मीद लेकर न आएँ।

न जुड़ें, अगर आपको सिर्फ़ पद और फोटो चाहिए। अगर आपकी चाहत सिर्फ़ इतनी है कि नाम के आगे एक पद जुड़ जाए, माला पहनकर तस्वीर खिंच जाए और व्हाट्सऐप पर स्टेटस लग जाए — तो कृपया न जुड़ें। यहाँ फोटो से पहले काम पूछा जाता है।

न जुड़ें, अगर आप निजी फ़ायदा चाहते हैं। अगर सोच यह है कि संगठन का नाम लेकर अपना काम निकलवाएँगे, अपने विरोधी पर दबाव बनाएँगे, किसी ग़लत काम की सिफ़ारिश कराएँगे — तो न जुड़ें। संगठन का नाम किसी के निजी स्वार्थ का औज़ार नहीं है, और ऐसा करने वाला हमारे बीच टिक नहीं सकता।

न जुड़ें, अगर आप समय नहीं दे सकते। सदस्यता कागज़ पर नहीं, ज़मीन पर होती है। महीने में कुछ समय भी समाज के लिए न निकलता हो, तो नाम जुड़वाकर सूची लंबी करना बेमानी है। पहले अपने हालात ठीक कीजिए, फिर जब समय हो, तब पूरे मन से आइए — दरवाज़ा खुला रहेगा।

न जुड़ें, अगर आप संगठन को राजनीति का सीढ़ी बनाना चाहते हैं। हमारा काम जनता के अधिकारों का है। यहाँ आने वाले का स्वागत इंसान के रूप में होता है, किसी दल के झंडे के रूप में नहीं। जो यहाँ से होकर कहीं और की सीढ़ी खोजता है, वह यहाँ की आत्मा को समझ ही नहीं पाया।

न जुड़ें, अगर आपको “मुझे क्या मिलेगा” के अलावा कुछ सुनाई नहीं देता। देने की भावना के बिना लिया गया साथ, साथ नहीं होता — सौदा होता है। और यह संगठन सौदे से नहीं, संकल्प से चलता है।

यह अध्याय किसी को रोकने के लिए नहीं, बचाने के लिए है — आपका समय भी बचे, और संगठन की ऊर्जा सही लोगों पर लगे। और अगर इन सब बातों को पढ़कर भी आपका मन कहे कि “मैं देने के लिए आया हूँ” — तो समझिए, आप बिल्कुल सही जगह आए हैं। आपका हार्दिक स्वागत है।

याद रखिए

गलत उम्मीद लेकर जुड़ने से अच्छा है, न जुड़ना। सही भावना लेकर देर से जुड़ना, गलत भावना से जल्द जुड़ने से लाख दर्जे बेहतर है।

आज साथ दीजिए, कल साथ मिलेगा

हमारे समाज की सबसे पुरानी और सबसे सच्ची व्यवस्था कोई सरकारी योजना नहीं है — वह है एक-दूसरे का साथ। गाँव में जब किसी का घर बनता था, तो पूरा गाँव श्रमदान करता था। जब किसी के यहाँ संकट आता था, तो मोहल्ला खड़ा हो जाता था। यही “आज साथ, कल साथ” की परंपरा है, जिस पर पब्लिक राइट्स एसोसिएशन खड़ा है।

ज़रा सोचिए — आज जिस व्यक्ति की सुनवाई नहीं हो रही, वह कोई अजनबी ही क्यों न हो, उसकी जगह कल आप भी हो सकते हैं। जीवन का पहिया घूमता है। आज आपका समय अच्छा है, आवाज़ मज़बूत है, जान-पहचान काम कर रही है — मगर समय हमेशा एक-सा नहीं रहता। जिस दिन पहिया घूमेगा, उस दिन वही लोग आपके काम आएँगे, जिनके काम आज आप आए हैं।

यह कोई सौदे की बात नहीं है कि “तुम मेरा काम करो, मैं तुम्हारा करूँगा।” यह उससे बड़ी बात है — यह संस्कृति है। जब आप बिना किसी जान-पहचान के, किसी अजनबी पीड़ित के साथ खड़े होते हैं, तो आप उस संस्कृति को ज़िंदा करते हैं, जिसमें कल कोई अजनबी आपके लिए भी खड़ा होगा। संगठन इसी संस्कृति का संगठित रूप है।

मैंने बार-बार देखा है — जिन लोगों ने कभी किसी की मदद में दो क़दम चले थे, मुसीबत में उनके लिए दो सौ लोग खड़े हो गए। और जिन्होंने हर बार “मुझे क्या मतलब” कहकर मुँह फेर लिया, उन्हें अपने ही संकट में चारों ओर सन्नाटा मिला। समाज आईना है — जैसी तस्वीर आप बनाते हैं, वैसी ही लौटकर आती है।

इसलिए संगठन का हर सदस्य यह बात गाँठ बाँध ले — किसी की मदद को “उसका काम” समझकर मत कीजिए, “अपना निवेश” समझकर कीजिए। यह निवेश पैसे का नहीं, इंसानियत का है — और इसका ब्याज साथ के रूप में मिलता है, जो किसी बैंक में नहीं मिलता।

आज साथ दीजिए — किसी की फ़ाइल आगे बढ़ाने में, किसी को सही रास्ता बताने में, किसी के कार्यालय तक साथ जाने में, किसी हारे हुए इंसान को हिम्मत देने में। और विश्वास रखिए — कल, जब आपकी बारी आएगी, यह वही साथ हाथ बढ़ाकर आपकी ओर आएगा। इसी विश्वास का नाम संगठन है।

संगठन का सूत्र

आज आप किसी के साथ खड़े होइए, कल पूरा समाज आपके साथ खड़ा होगा। साथ बाँटने से घटता नहीं — बढ़ता है।

जुड़ने के बाद क्या करना है?

जुड़ना पहला क़दम है, असली यात्रा उसके बाद शुरू होती है। बहुत लोग जुड़कर यह सोचकर बैठ जाते हैं कि काम हो गया। नहीं — जुड़ना बीज बोना है, पेड़ बनना बाक़ी है। यह अध्याय हर सदस्य की कार्य-सूची है।

एक — सबसे पहले संगठन को समझिए। यह पुस्तक पूरी पढ़िए। विज़न, मिशन और नियम जानिए। अपने क्षेत्र के वरिष्ठ साथियों से मिलिए और पिछले कामों को समझिए। बिना समझे किया गया काम अक्सर भटकाता है।

दो — अपने आसपास की समस्याएँ सुनिए। अपने मोहल्ले, गाँव, बाज़ार और कार्यस्थल में लोगों की वास्तविक समस्याएँ जानिए — किसकी सुनवाई नहीं हो रही, किसका हक़ अटका है। सुनना ही सेवा की शुरुआत है। और हर सच्ची समस्या को संगठन तक सही ढंग से पहुँचाइए।

तीन — जानकारी बाँटिए। जो अधिकार और योजनाएँ आप जानते हैं, वे दूसरों को बताइए। एक जानकारी अगर दस लोगों तक पहुँच जाए, तो दस परिवार बिचौलियों से बच सकते हैं। जानकारी बाँटना सबसे सस्ती और सबसे बड़ी सेवा है।

चार — साथ चलिए। जब संगठन किसी पीड़ित के काम में लगे, तो अपनी उपस्थिति दीजिए। कार्यालय जाना हो, बैठक हो, कार्यक्रम हो — आपकी हाज़िरी ही दूसरे की हिम्मत है। काम हमेशा बड़े भाषणों से नहीं, छोटे-छोटे साथ से होता है।

पाँच — लोगों को जोड़िए और सोशल मीडिया पर सही प्रचार कीजिए। इन दोनों पर अलग अध्याय हैं — उन्हें ध्यान से पढ़िए, क्योंकि जोड़ना और प्रचार ही संगठन की साँस है।

छह — अनुशासन और ईमानदारी बनाए रखिए। समय पर पहुँचिए, वादा करके निभाइए, किसी काम की जानकारी गोपनीय हो तो उसे गोपनीय रखिए, और अपनी हर गतिविधि की जानकारी संगठन को दीजिए। एक सदस्य की ईमानदारी पूरे संगठन की साख होती है।

यह सूची लंबी लग सकती है, मगर शुरुआत सिर्फ़ एक काम से कीजिए — इस महीने एक व्यक्ति की सच्ची मदद। फिर देखिए, काम अपने आप रास्ता बनाता है।

सदस्य की पहली प्रतिज्ञा

हर महीने कम से कम एक व्यक्ति की सच्ची समस्या सुनूँगा, उसे सही जानकारी दूँगा, और ज़रूरत हो तो उसके साथ खड़ा होऊँगा।

जुड़कर क्या बिल्कुल नहीं करना है?

जितना ज़रूरी यह जानना है कि क्या करना है, उतना ही ज़रूरी यह जानना है कि क्या बिल्कुल नहीं करना है। एक सदस्य की एक ग़लती, पूरे संगठन की बरसों की साख को नुकसान पहुँचा सकती है। इसलिए ये बातें नियम हैं, सलाह नहीं।

पैसे बिल्कुल न लें। किसी भी काम के लिए, किसी भी नाम पर — सदस्यता, मदद, सिफ़ारिश, पहचान-पत्र — न स्वयं पैसा लें, न किसी और को लेने दें। हमारा संगठन कोई शुल्क नहीं लेता; जो इसके नाम पर पैसा माँगे, वह इस संगठन की भावना के खिलाफ़ है। ऐसी जानकारी मिलते ही संगठन को बताएँ।

संगठन के नाम का ग़लत इस्तेमाल न करें। नाम और प्रतीक का उपयोग निजी काम, दबाव बनाने, धमकी देने, अपने विवाद सुलझाने या रौब दिखाने के लिए हरगिज़ न करें। नाम संगठन की अमानत है, किसी की जागीर नहीं।

झूठा वादा और झूठी ख़बर न करें। जिस काम का भरोसा न हो, उसका वादा न करें। जो बात पक्की न हो, उसे आगे न बढ़ाएँ। एक झूठ संगठन की हज़ार सच्चाइयों पर भारी पड़ता है।

भेदभाव न करें और हिंसा से दूर रहें। धर्म, जाति, भाषा या दल देखकर मदद का फैसला न करें। और किसी भी परिस्थिति में झगड़ा, धक्का-मुक्की या क़ानून अपने हाथ में लेने की ग़लती न करें — हमारा रास्ता शांतिपूर्ण, क़ानूनी और संगठित है।

राजनीति और गुटबाज़ी संगठन में न लाएँ। अपने निजी विचार आपके हैं, मगर संगठन के मंच को किसी दल या गुट का मंच न बनाएँ। यहाँ एक ही पहचान चलती है — जनता के अधिकार के साथी की।

किसी की निजी जानकारी न फैलाएँ। पीड़ित अपनी परेशानी भरोसे से बताता है। उसकी जानकारी, फोटो या दस्तावेज़ बिना अनुमति साझा करना विश्वासघात है। भरोसा ही हमारी पूँजी है।

जो सदस्य इन सीमाओं का सम्मान करता है, वह संगठन की शान है। और जो बार-बार इन्हें तोड़ता है, उसके लिए इस परिवार में जगह नहीं रहती — क्योंकि संगठन व्यक्ति से बड़ा होता है।

छह वर्जित कार्य

पैसा लेना, नाम का दुरुपयोग, झूठा वादा, भेदभाव व हिंसा, गुटबाज़ी, और निजी जानकारी फैलाना — ये छह काम किसी भी हाल में नहीं।

लोगों को जोड़ने का काम — हर सदस्य, एक कड़ी

संगठन का सबसे महत्वपूर्ण काम कोई एक व्यक्ति नहीं करता — वह काम है जोड़ना। हर सदस्य अगर अपने जीवन-काल में सिर्फ़ दस सच्चे लोगों को जोड़ दे, तो संगठन एक परिवार से बढ़कर एक समाज बन जाता है। यह अध्याय उसी कला पर है — लोगों को सही ढंग से कैसे जोड़ा जाए।

जोड़ना यानी सूची बढ़ाना नहीं, भरोसा बनाना। नाम लिखवाना आसान है, दिल जोड़ना कठिन। किसी को जोड़ने से पहले उससे बात कीजिए — उसकी समस्याएँ सुनिए, संगठन का काम असली उदाहरणों से समझाइए, और यह पुस्तक पढ़ने को दीजिए। जो समझकर जुड़ता है, वही टिकता है।

हर वर्ग तक पहुँचिए। अपने मोहल्ले के दुकानदार से, गाँव के किसान से, ऑटो-रिक्शा चलाने वाले साथी से, महिला समूहों से, छात्रों और युवाओं से, बुजुर्गों से — सबसे संवाद कीजिए। संगठन का सदस्य वही है, जिसकी पहुँच हर चौपाल और हर गली तक हो।

ज़बरदस्ती नहीं, निमंत्रण दीजिए। दबाव से जुड़ा व्यक्ति बोझ बनता है, निमंत्रण से जुड़ा व्यक्ति ताक़त। एक बार प्रेम से कहना, काम दिखाना, और फ़ैसला उसी पर छोड़ना — यही सही तरीक़ा है।

जुड़े हुए को अकेला न छोड़िए। नया सदस्य अगर दो बैठकों में नहीं आया, तो उसे ताना नहीं, फ़ोन कीजिए। कई लोग शर्म या संकोच से दूर हो जाते हैं। जोड़ने जितना ही ज़रूरी है — जोड़े रखना।

गुणवत्ता पर ध्यान दीजिए। हमें हज़ार ऐसे नामों से बेहतर सौ ऐसे साथी हैं, जो समय देते हैं, सच बोलते हैं और साथ खड़े होते हैं। संख्या का घमंड संगठन को खोखला करता है, साथियों की सच्चाई उसे मज़बूत।

याद रखिए — आप जब किसी को जोड़ते हैं, तो आप उसे सिर्फ़ संगठन से नहीं जोड़ते, आप उसे अपने वादे से जोड़ते हैं कि मुश्किल में वह अकेला नहीं रहेगा। इसलिए सोचकर जोड़िए, सम्मान से जोड़िए, और जोड़कर निभाइए। यही इस अध्याय का सार है।

जोड़ने का सूत्र

सुनो, समझाओ, निमंत्रण दो — फिर साथ निभाओ। समझकर जुड़ा एक साथी, भीड़ के सौ नामों से भारी होता है।

सोशल मीडिया पर प्रचार-प्रसार — सही तरीका

आज के दौर में संगठन की आवाज़ सिर्फ़ चौपाल तक सीमित नहीं है — वह हर मोबाइल तक पहुँच सकती है। सोशल मीडिया वह मंच है, जहाँ से हमारा काम, हमारी जानकारी और हमारी अपील एक साथ हज़ारों लोगों तक जाती है। हर सदस्य का कर्तव्य है कि वह इस मंच पर संगठन का सच्चा और ज़िम्मेदार प्रचारक बने।

क्या साझा करें? संगठन के कार्यक्रमों और मदद के असली काम, अधिकारों की उपयोगी जानकारी, योजनाओं की सही सूचना, बैठक व शिविर की सूचना, और संगठन की आधिकारिक अपीलें। कोई अच्छी बात जो आपने संगठन से सीखी हो, उसे अपने शब्दों में लिखकर साझा करना भी प्रचार है — और सबसे असरदार प्रचार।

कैसे साझा करें? पहले खुद पढ़ें और सत्यापित करें कि सूचना संगठन की आधिकारिक घोषणा है। फिर उसे अपने सभी मंचों — फेसबुक, व्हाट्सऐप, इंस्टाग्राम, एक्स (ट्विटर) — पर लगाएँ। सिर्फ़ एक बार डालकर न भूलें — सही सूचना को समय-समय पर फिर से साझा करना भी ज़रूरी होता है। अपने साथियों को टैग करने और समूहों में भेजने में संकोच न करें, मगर स्पैम बनकर नहीं, सूचना बनकर।

क्या बिल्कुल साझा न करें? अपुष्ट ख़बरें, किसी व्यक्ति या समुदाय के खिलाफ़ नफ़रत भरी बातें, किसी पीड़ित की बिना अनुमति वाली फोटो या निजी जानकारी, और संगठन के नाम पर बनी ग़ैर-आधिकारिक पोस्टें। तेज़ी से आगे बढ़ाई गई एक ग़लत पोस्ट, धीरे-धीरे बनी साख़ को एक दिन में गिरा सकती है।

टिप्पणियों में शालीनता रखें। सोशल मीडिया पर संगठन का सदस्य हर जगह संगठन का चेहरा होता है। विरोधी टिप्पणी का जवाब भी मर्यादा में, तथ्य से दें। गाली-गलौज करने वाला अपना परिचय खुद देता है — हमें अपना स्तर बनाए रखना है।

एक समझदारी की बात — सोशल मीडिया प्रचार का माध्यम है, काम का विकल्प नहीं। जो सदस्य सिर्फ़ ऑनलाइन दिखता है और ज़मीन पर कभी नहीं, वह आधा सदस्य है। पोस्ट के साथ मैदान भी ज़रूरी है। दोनों साथ चलेंगे, तभी संगठन की आवाज़ दूर तक जाएगी।

सोशल मीडिया नियम

पहले सत्यापित करो, फिर साझा करो। संगठन की हर सही सूचना को हर सदस्य आगे बढ़ाए — यही आज के दौर में सबसे बड़ा प्रचार है।

लोकप्रियता और मिलते-जुलते नाम वाले संगठन

किसी काम की सफलता का एक अजीब प्रमाण यह भी होता है — उसकी नक़ल होने लगती है। बाज़ार में जिस चीज़ की माँग होती है, उसी की मिलती-जुलती चीज़ें बनने लगती हैं। आज पब्लिक राइट्स एसोसिएशन की लोकप्रियता उस मुक़ाम पर है कि हमारे नाम से मिलते-जुलते नाम रखकर लोग अपने संगठन बनाने लगे हैं।

यह बात हमें दो तरह से देखनी चाहिए। एक ओर यह जनता के भरोसे का सम्मान है — नाम वही अपनाया जाता है, जिसमें ताक़त होती है। कोई कमज़ोर नाम की नक़ल नहीं करता। दूसरी ओर यह एक चेतावनी भी है — कहीं कोई आम आदमी नाम की समानता में धोखा न खा जाए, कहीं कोई ग़लत व्यक्ति हमारे नाम का सहारा लेकर अपना काम न निकाल ले।

इसलिए हर सदस्य और हर नागरिक के लिए असली पहचान के कुछ स्पष्ट संकेत जानना ज़रूरी है। **एक** — हमारा पूरा और सही नाम है : पब्लिक राइट्स एसोसिएशन, तथा स्थापना वर्ष 2019। **दो** — हमारा आधिकारिक प्रतीक (लोगो) वही है, जो इस पुस्तक के आवरण पर छपा है — न्याय की तराजू वाला प्रतीक; प्रतीक में बदलाव या अलग डिज़ाइन दिखे, तो सावधान हो जाएँ। **तीन** — हम कोई सदस्यता शुल्क नहीं लेते; जहाँ नाम के साथ पैसे की माँग जुड़ी हो, वह हम नहीं हैं। **चार** — हमारी जानकारी का आधिकारिक स्रोत है : publicrights.in।

किसी मिलते-जुलते नाम वाले संगठन के बारे में हमें न ईर्ष्या है, न शिकायत की भावना। जो सच में जनता की सेवा करना चाहता है, वह किसी भी नाम से करे — समाज का भला होगा, हमें खुशी होगी। हमारा विरोध नक़ल से नहीं है; हमारा विरोध भ्रम और दुरुपयोग से है। नाम मिलता हो, मगर काम और नीयत अलग हों, तो जनता भ्रमित होती है — और भ्रमित जनता का नुक़सान सबसे पहले उसी आम आदमी का होता है, जिसके लिए हम खड़े हैं।

सदस्यों से मेरी अपील है — जहाँ कहीं नाम की समानता से भ्रम फैलता देखें, वहाँ झगड़ा न करें, स्पष्टता दें। प्रेम से बताएँ कि असली संगठन कौन-सा है, उसकी पहचान क्या है, और जानकारी कहाँ से सत्यापित की जाए। सच्चाई को चिल्लाने की ज़रूरत नहीं होती — उसे सिर्फ़ साफ़ बोलना होता है।

और अंत में एक बात गर्व से — नक़ल हमेशा मूल की होती है। हमारा काम ही हमारा जवाब है। जिस दिन भी तुलना होगी, काम बोलेगा — नाम नहीं।

असली की पहचान — चार संकेत

पूरा नाम : पब्लिक राइट्स एसोसिएशन • स्थापना : 2019 • आधिकारिक प्रतीक इस पुस्तक के आवरण वाला • कोई सदस्यता शुल्क नहीं • स्रोत : publicrights.in

किसके साथ खड़ा है यह संगठन?

अक्सर पूछा जाता है — यह संगठन आखिर किसका है? जवाब छोटा है — उसका, जिसकी सुनवाई नहीं हो रही। फिर भी इस अध्याय में मैं उन चेहरों को सामने रखता हूँ, जिनके बीच हमारा काम सबसे ज़्यादा रहता है — ताकि हर सदस्य जान ले कि उसकी ज़िम्मेदारी कहाँ-कहाँ है।

किसान और मज़दूर के साथ। जिसकी फ़सल, मज़दूरी, मुआवज़ा या हक़ काग़ज़ों और वादों में अटका हो — उसकी मेहनत का सम्मान और उसका हक़, हमारी प्राथमिकता है। अन्न उगाने और देश बनाने वाले हाथ कभी बेसहारा न रहें।

महिलाओं के साथ। जिस महिला की शिकायत सुनी न जा रही हो, जिसे उसके अधिकारों की जानकारी न हो, जो घर या बाहर अन्याय सह रही हो — उसे जानकारी, हिम्मत और साथ देना हमारा कर्तव्य है। महिला मज़बूत होगी, तो परिवार और समाज अपने आप मज़बूत होगा।

युवा और छात्रों के साथ। छात्रवृत्ति, शिक्षा, रोज़गार की सही जानकारी और अपने अधिकारों की समझ — युवा सिर्फ़ भविष्य नहीं, वर्तमान की ताक़त है। हम चाहते हैं कि युवा शिकायत करने वाला नहीं, समाधान का हिस्सा बनने वाला बने — और संगठन उसी का मंच है।

बुजुर्गों, गरीबों और अकेले पड़ गए हर इंसान के साथ। जिस बुजुर्ग की पेंशन अटकी हो, जिस गरीब को योजना का लाभ पहुँच ही न रहा हो, जिस अकेले व्यक्ति के साथ खड़ा होने वाला कोई न हो — वही हमारा सबसे पहला हक़दार है। संगठन की परख बड़ी सभाओं से नहीं, इन चेहरों की मुस्कान से होती है।

इस सूची की सबसे सुंदर बात यह है — यह सूची धर्म, जाति और क्षेत्र देखकर नहीं बनी है। यह इंसानियत देखकर बनी है। जिस दिन भी, जहाँ भी, किसी की सच्ची बात अनसुनी होगी — वहाँ पब्लिक राइट्स एसोसिएशन का साथ पहुँचना चाहिए। यही हमारी पहचान है और यही हमारा धर्म।

हमारा पक्ष

हम ताक़तवर के साथ नहीं, सच्चे के साथ खड़े हैं। कमज़ोर की सच्ची बात ही हमारी सबसे मज़बूत अपील है।

अधिकार जानना ही पहली ताक़त है

मैं अपने अनुभव से कहता हूँ — ज़्यादातर अन्याय इसलिए टिकता है, क्योंकि पीड़ित को पता ही नहीं होता कि उसके साथ ग़लत हो रहा है, या ग़लत के खिलाफ़ रास्ता क्या है। अज्ञान ही शोषण की सबसे मज़बूत जड़ है। इसीलिए हमारा संगठन जानकारी को हथियार नहीं, ढाल मानता है — सुरक्षा की ढाल।

हर नागरिक को कुछ बुनियादी बातें अवश्य जाननी चाहिए — उसका काम किस कार्यालय से है, आवेदन कैसे और कहाँ दिया जाता है, आवेदन की प्रति (रिसीविंग) लेना क्यों ज़रूरी है, समय-सीमा क्या है, सुनवाई न हो तो अगला स्तर कौन-सा है, और शिकायत की लिखित प्रणाली क्या है। ये छोटी-छोटी बातें ही बड़े-बड़े शोषण को रोकती हैं। संगठन के शिविरों और बैठकों में यही जानकारी आम भाषा में दी जाती है।

तीन आदतें हर सदस्य अपने जीवन में उतारे और दूसरों को सिखाए — **पहली, हर काम लिखित में कीजिए।** मुँहज़बानी बात हवा होती है, लिखित आवेदन सबूत होता है। **दूसरी, हर कागज़ की प्रति अपने पास रखिए।** दस्तावेज़ ही आपकी ताक़त हैं। **तीसरी, तारीख़ और नाम नोट कीजिए।** किससे, कब, क्या बात हुई — यह छोटा-सा रिकॉर्ड बाद में बहुत काम आता है।

साथ ही यह भी समझना ज़रूरी है कि अधिकार के साथ कर्तव्य जुड़ा है। हम अपने हक़ की बात तभी मज़बूती से कर सकते हैं, जब हम दूसरों के हक़ का भी सम्मान करें, क़ानून की प्रक्रिया का धैर्य रखें, और किसी भी हाल में हिंसा या ग़लत रास्ता न अपनाएँ। सही काम, सही तरीक़े से — यही टिकता है।

यह पुस्तक स्वयं इसी मिशन का हिस्सा है। अगर इसे पढ़कर एक भी पाठक अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हो गया, एक भी परिवार बिचौलिए से बच गया, एक भी युवा अपने मोहल्ले के लोगों को जानकारी देने लगा — तो इस पुस्तक का उद्देश्य पूरा हो गया। जानकारी बाँटिए — यह वह दौलत है, जो बाँटने से बढ़ती है।

तीन सुनहरी आदतें

आवेदन लिखित में दो, प्रति अपने पास रखो, और तारीख़ व नाम नोट करो। जागरूक नागरिक ही सुरक्षित नागरिक है।

एकता ही शक्ति है — भविष्य और संकल्प

अंतिम अध्याय में मैं आपको 2019 से लेकर आज तक के सफ़र का निचोड़ और आगे का संकल्प देता हूँ। हमने एक सोच से शुरुआत की थी — आज वह सोच एक परिवार बन चुकी है। मगर मंज़िल अभी दूर है, क्योंकि जब तक एक भी व्यक्ति बेसहारा है, हमारा काम बाक़ी है।

हमारा भविष्य का संकल्प स्पष्ट है — हर मोहल्ले, हर गाँव, हर क़स्बे तक संगठन की पहुँच हो; हर जगह कुछ ऐसे जागरूक साथी हों, जो लोगों को उनके अधिकार बता सकें, सही रास्ता दिखा सकें और मुश्किल में साथ खड़े हो सकें। युवाओं की भागीदारी बढ़े, महिलाएँ आगे आएँ, और सोशल मीडिया से लेकर चौपाल तक — संगठन की सच्ची आवाज़ हर मंच पर गूँजे।

मगर यह संकल्प मेरे अकेले कहने से पूरा नहीं होगा। यह आपके करने से पूरा होगा। संगठन किसी एक व्यक्ति का नाम नहीं है — वह हर उस व्यक्ति का सामूहिक नाम है, जो इसके नियमों पर चलकर, इसके भाव को जीकर, जनता के साथ खड़ा होता है।

इसलिए पुस्तक के अंत में मैं कोई बड़ा भाषण नहीं देता — सिर्फ़ तीन छोटे संकल्प देता हूँ। **पहला** — मैं किसी से उसकी सदस्यता या मदद के नाम पर पैसा नहीं लूँगा, न लेने दूँगा। **दूसरा** — मैं हर महीने कम से कम एक व्यक्ति की सच्ची मदद करूँगा और एक नए साथी को संगठन से जोड़ूँगा। **तीसरा** — मैं संगठन के नाम को अपने स्वार्थ के लिए कभी इस्तेमाल नहीं करूँगा।

अगर आप ये तीन संकल्प ले सकते हैं, तो आप सिर्फ़ इस पुस्तक के पाठक नहीं रहे — आप इस परिवार के सच्चे सदस्य बन गए। और अगर अभी मन में कोई शंका है, तो फिर से पढ़िए, सोचिए, लोगों से पूछिए — फिर आइए। यह दरवाज़ा जल्दबाज़ी के लिए नहीं, ज़िंदगी भर के साथ के लिए खुला है।

आखिरी बात — एकता ही शक्ति है, यह पुराना वाक्य है; मगर इसका नया अर्थ यह है कि बँटी हुई जनता ही हर शोषण की ताक़त होती है, और जुड़ी हुई जनता ही हर सुधार की शुरुआत। आओ, जुड़ें — अधिकार के लिए, इंसाफ़ के लिए, और उस कल के लिए, जिसमें कोई अकेला न रहे।

— कामरान असद

अध्यक्ष, पब्लिक राइट्स एसोसिएशन

आह्वान

जुड़िए, जोड़िए, और साथ निभाइए। कोई शुल्क नहीं — सिर्फ़ संकल्प चाहिए। —
पब्लिक राइट्स एसोसिएशन (स्थापना : 2019)

सदस्य संकल्प और एक दृष्टि में संगठन

सदस्य संकल्प

मैं, पब्लिक राइट्स एसोसिएशन का सदस्य / साथी, संकल्प लेता / लेती हूँ कि
—

1. मैं जनता के अधिकारों के लिए ईमानदारी से काम करूँगा / करूँगी।
2. मैं किसी से सदस्यता या मदद के नाम पर कोई शुल्क या धन नहीं लूँगा / लूँगी।
3. मैं संगठन के नाम और प्रतीक का उपयोग निजी स्वार्थ, दबाव या प्रचार के लिए नहीं करूँगा / करूँगी।
4. मैं धर्म, जाति, भाषा या वर्ग का भेद किए बिना हर सच्चे पीड़ित का साथ दूँगा / दूँगी।
5. मैं लोगों को उनके अधिकारों की सही जानकारी दूँगा / दूँगी और नए साथियों को जोड़ूँगा / जोड़ूँगी।
6. मैं सोशल मीडिया पर केवल सत्यापित और संगठन की आधिकारिक जानकारी ही साझा करूँगा / करूँगी।

7. मैं हर कार्य शांतिपूर्ण और क़ानूनी तरीक़े से करूँगा / करूँगी तथा संगठन के अनुशासन का पालन करूँगा / करूँगी।

एक दृष्टि में — पब्लिक राइट्स एसोसिएशन

स्थापना : 2019

पूरा नाम : पब्लिक राइट्स एसोसिएशन (Public Rights Association)

विज़न : समाज, जहाँ कोई अपने अधिकार के लिए बेसहारा न रहे।

मिशन : जानकारी, मार्गदर्शन और साथ — बिना शुल्क, बिना भेदभाव।

सदस्यता शुल्क : कोई नहीं — पूर्णतः निःशुल्क।

कार्य-क्षेत्र : अधिकार-जागरूकता, पीड़ितों को मार्गदर्शन व साथ, लोगों को जोड़ना, सोशल मीडिया पर सही जानकारी का प्रचार-प्रसार।

सिद्धांत : आज साथ दीजिए, कल साथ मिलेगा।

आधिकारिक स्रोत : publicrights.in

ईमेल : kamranasadjournalist@gmail.com

जल्दी याद करने के लिए — करें / न करें

करें : सुनें, समझें, जानकारी दें, साथ चलें, जोड़ें, सत्यापित सूचना साझा करें, अनुशासन रखें।

न करें : पैसा न लें, झूठा वादा न करें, नाम का दुरुपयोग न करें, भेदभाव व हिंसा न करें, निजी जानकारी न फैलाएँ, गुटबाज़ी न करें।

॥ समाप्त ॥

अध्यक्ष परिचय



कामरान असद

अध्यक्ष — पब्लिक राइट्स एसोसिएशन

संपादक — मानवाधिकार मीडिया

कामरान असद पत्रकार, सामाजिक कार्यकर्ता और मानवाधिकार नेता हैं। मानवाधिकार मीडिया के संपादक के रूप में वे वर्षों से आम आदमी की आवाज़ को मंच देते आए हैं — उन लोगों की कहानियाँ सामने लाते हुए, जिनकी सुनवाई अक्सर कहीं नहीं होती।

सन् 2019 में स्थापित पब्लिक राइट्स एसोसिएशन के अध्यक्ष के रूप में उनका संकल्प एक ही रहा है — जिसकी सुनवाई न हो, उसके साथ खड़े होना; जिसे हक़ न मिले, उसे जानकारी और सही मार्गदर्शन देना। उनके नेतृत्व में संगठन ने बिना कोई सदस्यता शुल्क लिए जनता को जोड़ने का काम किया है, और यही लोकप्रियता उसकी सबसे बड़ी पूँजी है।

वेबसाइट : publicrights.in

ईमेल : kamranasadjournalist@gmail.com

इस पुस्तक के बारे में

सन् 2019 में स्थापित पब्लिक राइट्स एसोसिएशन उन लोगों की आवाज़ है, जिनकी सुनवाई नहीं होती, जिनको उनका हक नहीं मिलता और जो मुसीबत में अकेले पड़ जाते हैं। यह पुस्तक उसी संगठन की पूरी मार्गदर्शिका है — उसका विज़न, उसका मिशन, और हर सदस्य के लिए स्पष्ट नियम।

इसमें कोई गोल-मोल बात नहीं है। सीधे अध्याय हैं — जुड़ें तो क्यों जुड़ें, न जुड़ें तो क्यों न जुड़ें, जुड़ने के बाद क्या करना है, क्या बिल्कुल नहीं करना है, लोगों को कैसे जोड़ना है, सोशल मीडिया पर प्रचार कैसे करना है, और लोकप्रियता के इस दौर में मिलते-जुलते नाम वाले संगठनों से असली की पहचान कैसे करनी है। सबसे बड़े सवाल — “हमको क्या मिलेगा?” — का जवाब भी इसमें उतनी ही सच्चाई से दिया गया है।

“आज साथ दीजिए, कल साथ मिलेगा।”

विशेष बात : इस संगठन की सदस्यता पूर्णतः निःशुल्क है। कोई शुल्क नहीं, कोई वसूली नहीं — सिर्फ़ साथ, जानकारी और मार्गदर्शन।



संगठन की वेबसाइट — publicrights.in